उत्तर - आकुलता के अभाव में उत्पन्न अन्तर्मुखी आल्हाद रुप आनन्द को सच्चा सुख कहते है।

प्रश्न ४. स्वयं का आनन्द कैसे मिले ?

उत्तर - राग- द्वेष मोह संकल्प विकल्पों के अभाव में आत्मानुभूति होने पर स्वयं का आनन्द प्राप्त होता है।

प्रश्न ५. आकुलता आदि विभाव भावों का अभाव कहॉ पर है ?

उत्तर - राग-द्वेष रुप आकुलता का सर्वथा अभाव मोक्ष में है।

प्रश्न ६. मोक्ष किसे कहते है ?

उत्तर - समस्त कर्मो से विमुक्त होने का मोक्ष कहते है या आत्म स्वरुप का स्वतन्त्रता ही मोक्ष है।

प्रश्न ७. मोक्ष मार्ग किसे कहते है ?

उत्तर - मोक्ष मार्ग का अर्थ है मोक्ष का उपाय , वह अभेद रत्नत्रय है।

प्रश्न ८. मोक्ष की प्राप्ति कैसे होती है ?

उत्तर - मोक्ष की प्राप्ति सम्यग्दर्शन , ज्ञान, चारित्र रुप मोक्षमार्ग पर चलने से होती है।

प्रश्न ९. मोक्ष दशा तक पहुचने केकितने मार्ग है ?

उत्तर - मोक्ष तक पहुचने का मार्ग तो एक ही है - रत्नत्रय, परन्तु इस रत्नत्रय रुप मोक्षमार्ग का विवेचन निश्चय एवं व्यवहार नय की अपेक्षा दो रुप से किया गया है।

प्रश्न १०. निश्चय रत्नत्रय किसे कहते है ?

उत्तर - जो अभेद र्निविकल्प मोक्ष का साक्षात कारण है वह निश्चय रत्नत्रय है।

प्रश्न ११. व्यवहार रत्नत्रय किसे कहते है ?

उत्तर - जो भेद सविकल्प रत्नत्रय परम्परा से मोक्ष का कारण हो यानि निश्चय रत्नत्रय प्राप्ति का हेतु हो उसे व्यवहार रत्नत्रय कहते है।

प्रश्न १२. व्यवहार मोक्षमार्ग भी उपदेय है क्या ?

उत्तर - निश्चय का कारण होने से प्रारम्भिक भूमिका में व्यवहार मोक्षमार्ग उपादेय ही है।

प्रश्न १३. क्या व्यवहार मोक्षमार्ग केबिना निश्चय मोक्षमार्ग सम्भव है ?

उत्तर - नहीं, जैसे माता पिता केअभाव में पूत्र संभव नहीं, फूल केअभाव में फल संभव नहीं, उसी प्रकार व्यवहार मोक्ष मार्ग केबिना निश्चय मोक्षमार्ग संभव नहीं।

निश्चय रत्नत्रय

पर द्रव्यनतें भिन्न आपमें, रुचि सम्यक्त्व भला है ।
आप रुप को जान पनों सों, सम्यग्ज्ञान कला है ॥
आप रुप में लीन रहे थिर, सम्यकचारित्र्य सोई।
अब व्यवहार मोक्ष मग सुनिये, हेतु नियत को होई्र ॥ २ ॥

अन्वयार्थ - (पर द्रव्यनतें भिन्न) पर वस्तुओं से अत्यन्त भिन्न (आन में) अपने स्वरुप में (रुची) विशेष अभिरुची रखना (भला सम्यक्त्व है) यथार्थ सम्यग्दर्शन है (आप रुप को) अपने यथार्थ स्वरुप का (जान पनो) परिज्ञान करना (सो सम्यग्ज्ञान कला है) वह वास्तविक सम्यग्ज्ञान है (आप रुप में) अपने त्रिकालि स्वरुप में (थिर लीन रहें) निश्चिय रुप से विलीन रहना (सोई सम्यक चारित्र) वह सम्यकचारित्र है (अब) इसकेअनन्तर (व्यवहार मोक्षमग) व्यवहार मोक्षमार्ग की विवेचना सुनिये (नियत का हेतु होई) जो यह व्यवहार मोक्ष मार्ग का हेतु कारण है ।

.७०.

भावार्थ - जीव और पुद्गल की विकारी अवस्था रुप अनन्तानन्त वस्तुओं से संसार ओत-प्रोत है । विभाव परिणती से परिणत शरीर और आत्मा को एक मानने वाला एवं इष्ट अनिष्ट की कल्पना में लीन आत्मा बहिरात्मा है । अत: लोक में अवस्थित परिपूर्ण् पर वस्तुओं से विमुख होकर एक मात्र अपने स्वरुप में परिपूर्ण् निश्चल अभिरुची ही सम्यग्दर्शन है ।

अज्ञानी प्राप्ती पर वस्तु का ज्ञान करने में अपनी शान्ति का अपव्यय करता हुआ ही अपने आपको ज्ञानी मानता है परन्तु परागमुखी ज्ञान वास्तविक ज्ञान नहीं , अपने स्वरुप का जानना ही यथार्थ सम्यग्ज्ञान है, शेष सभी ज्ञान जो मात्र पर की ही खोज में निमग्न है वह मिथ्याज्ञान है ।

यह जीव पर में वीलीन हो जाना ही अपना धर्म मानकर अनादि काल से भव समुद्र में गोता खा रहा है, जन्म मरण के दु:ख उठा रहा है । अज्ञानी समझाने पर भी पर को संगति से मुक्त होने को तैयार नहि है । वस्तुत: पर में रमणना ही विभाव परिणितीया मिथ्याचारित्र । है और अपने स्वरुप का परिज्ञान कर उसी में तन्मय अर्थात लीन हो जाना (स्थिर हो जान ।) सम्यक चारित्र है ।

.७१.

यह विवेचना निश्चय सम्यकदर्शन , ज्ञान एवं निश्चय सम्यक चारित्र की है । इसके अनन्तर विवेचना उस व्यवहार रत्नत्रय की है जो निश्चय रत्नत्रय को जन्म देने में कारण है । जैसे- बीज के बिना वृक्ष नहीं होता, माता के बिना पूत्र नहीं होता, ठीक उसी प्रकार व्यवहार रत्नत्रय केबिना निश्चय रत्नत्रय नहिं होता । वास्तविकता यह है कि रत्नत्रय अभेद है । निश्चय और व्यवहार केविकल्प अभ्यन्तर-बाहय दृष्टि की अपेक्षा से किये गये है । कथन पध्दति की अनेक्षा या कार्य कारण की अपेक्षा से या पात्रो की अपेक्षा से रत्नत्रय को भेदों में बिभाजित किया है ।

संक्षिप्त में समझने के लिये निश्चय और व्यवहार रत्नत्रय पिता और पुत्र की तरह एक समय में ही उत्पन्न होते है।

प्रश्न १. पर द्रव्य कौन कौन से है ?
उत्तर - निजात्म स्वरुप के अतिरिक्त विश्व के जितने भी जीव, पुद्गल आदि छः द्रव्य है, चाहे वह शरीरादि के रुप में हों, चाहें वह स्त्री, पुत्र, मित्र आदि के रुप में हों, चाहे वह धन वैभवादि के रुप में हों, यह सभी पर द्रव्य है।

प्रश्न २. रुचि किसे कहते है?
उत्तर - किसी भी वस्तू को प्राप्त करने की भावना या उसके प्रति विशेष अनुराग को रुचि कहते है। जैसे किसी मनुष्य के मन में लखपति, करोडपति, अरबपति बनने की विशेष भावना है यही उसकी पैसे के प्रति रुचि है।

प्रश्न ३. निश्चय सम्यग्दर्शन किसे कहते है ?
उत्तर - पर पदार्थो से विमुख होकर वस्तू स्वरुप की यथार्थ श्रध्दासहित निजात्म स्वरुप की और विशेष अभिरुचि का होना ही निश्चय सम्यग्दर्शन है।

प्रश्न ४. अपने स्वरुप को कैसे जाना जाता है ?
उत्तर - अनन्त गुण एवं पर्यायो ये युक्त अखण्ड अविनाशी ज्ञायक स्वभावी मै चैतन्य स्वारुप आत्मा हूँ। येसा स्वयं के सम्यग्ज्ञान द्वारा स्वयं को जाना जाता है।

प्रश्न ५. निश्चय सम्यग्ज्ञान किसे कहते है ?
उत्तर - अनन्त गुण एवे अनन्त पर्यायें सहित निजात्म के त्रिकाली स्वरुप एवं वर्तमान अवस्था को यथार्थ रुप से जानना ही निश्चय सम्यग्ज्ञान है।

प्रश्न ६. अपने स्वभाव में जीव कैसे रहते है ?
उत्तर - पर वस्तुओं से विमुख होकर इन्द्रिय विषय आदि कुत्सित वासनाओं का त्याग कर क्रोध, मान, माया, लोभ एवं राग द्वेषादि विकारी भावों से विमुख होकर दर्शन, ज्ञान, सुखदी स्वात्म गुणों में स्थिर अर्थात निमग्न हो जाना ही अपने स्वरुप में लीन रहना है।

प्रश्न ७. निश्चय सम्यक चारित्र किसे कहते है ?
उत्तर - राग-द्वेष आदि विभाव भावों से परिमुक्त होकर मात्र निजात्म स्वरुप में रमण करना या निर्विकल्प होकर ज्ञाता दृष्टा मात्र रहना यही सम्यक चारित्र है।

व्यवहार सम्यग्दर्शन

जीव अजीव तत्व अरु आस्त्रव, बंध रु संवर जानो।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यों का त्यों सरधानो ॥

है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रुप बखानो ।
तिनको सुन सामान्य निशेषै, दृढ प्रतीत उर आनो ॥ ३ ॥

अन्वयार्थ - (जीव, अजीव, आस्त्रव बंध, संवर,निर्जरा अरु मोक्ष जिन कहे जानो तिनको ज्यों का त्यों सरधानो) जीव, अजीव ,आस्त्रव ,बंध , संवर ,निर्जरा एवं मोक्ष यह सप्त तत्व जिनेन्द्र भगवान ने प्रतिपादीत किये है । इन सातों तत्वों काजैसा का तैसा श्रध्दान करना चाहिये । (है सोई समकित व्यवहारी) इन तत्वों का यथार्थ श्रध्दान करना व्यवहार सम्यग्दर्शन है (अब इन रुपबखानो)अब आगे इन सातों तत्वचों केस्वरुप की विवेचना की जा रही है (तिनको सामान्य विशेष सुन) उन तत्वों केस्वरुप को सामान्य एवं विशै्ाष रुप से सुनकर (उर दृढ प्रतीत आनो) अपने ह्रदय में निश्चल श्रध्दान करो ।

भावार्थ - वीतराग सवर्ज्ञ एवं हितोपदेशी तीर्थकर भगवान ने वस्तु स्वरुप का प्रतिपादन करते हुये जीव, अजीव, आस्त्रव , बंध, संव निर्जरा मोक्ष इन सात तत्वों केस्वरुप को प्रतिपादित किया है । इन तत्वों केहेयोपादेय रुप से जिस प्रकार आगम में विवेचन है उसी प्रकार से श्रध्दान कर लेना सम्यक्त्व का उपाय है, मोक्ष का कारण है । सभी जीवादी सप्त तत्व ज्ञेय है ं एवं इनमें आस्त्रव, बंध हेय है तथा संवर, निर्जरा एवं मोक्ष तत्व उपादेय है और निज जिव ध्येय है । इस प्रकार आगम प्रमाण से तत्वों केप्रति अपने ह्रदय में यथावत आस्था जमा लेना यही है व्यवहार सम्यग्दर्शन ।

अत: इन्ही सप्त तत्वों की विवेचना सामान्य एवं विशेष रुप से तत्वों के स्वरुप को समझकर आत्म जागृति करना ही श्रेयस्कर है ।

.७४.

प्रश्न १ व्यवहार सम्यग्दर्शन किसे कहते है ?
उत्तर- सप्त तत्वों केयथार्थ श्रध्दान को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहते है ।

प्रश्न २. तत्व किसे कहते है ?
उत्तर- वस्तु केयथार्थ् स्वरुप (सार) को तत्व कहते है ।

प्रश्न ३. तत्व कितने होते है ?
उत्तर - तत्व सात होते है ।

प्रश्न ४. तत्वों केनाम किस प्रकार है ?
उत्तर - तत्वों केनाम -(१) जीव (२) अजीव (३) आस्त्रव (४)बन्ध (५) संवर (६) निर्जरा (७) मोक्ष ।

प्रश्न ५. सात तत्वों में ज्ञेय, हेय, उपादेय एवं ध्येय कौन है ?
उत्तर - ावादी सात तत्व ज्ञेय है ,आस्त्रव - बन्ध हेय है तथा संवर निर्जरा , मोक्ष उपादेय है और निज जीव का शुध्द स्वरुप ध्येय है ।

गति केभेद, बहिरात्मा और उत्तम अप्तरात्मा का लक्षण

बहिरातम अन्तर आतम, परमातम जीव त्रिधा है ।
देह जीव को एक गिने, बहिरातम तत्व मुधा है ॥
उत्तम मध्यम जधन त्रिविध के, अन्तर आतम ज्ञानी ।
द्विविध संग बिन सुघ उपयोगी, मुनि उत्तम निज ध्यानी ॥ ४ ॥

अन्वयार्थ - (बहिरातम अन्तर आतम परमातम जीव त्रिधा है) बहिरात्मा अन्त्रात्मा और परमात्मा के भेद से जीव तीन प्रकार के है । (देह जीव को एक गिने) जो शरीर एवं आत्मा को एकही समझता है (बहिरातम तत्व मुधा) वह बहिरात्मा है,

.७५.

तत्वज्ञान से विमुख मिथ्यादृष्टि है (उत्तम,मध्यम,जघन, विविध के) उत्तम, मध्यम और जधन्य यह तीन प्रकार के (ज्ञानी, अन्तर आतम) ज्ञानी अन्तरात्मा है (द्विवीध संग बिन सुध उपयोगी) उनमें से अन्तरंग एवं दोनों प्रकार के परिग्रह से मुक्त शुध्दीपयोगी (निज ध्यानी मुनि उत्तम) निज विशुध्दात्म रुप में निमग्न रहने वाले मुनिराज उत्तम अन्तरात्मा है ।

भावार्थ- जिनेन्द्र भगवान के द्वारा प्रतिपीदत षट् द्रव्य के समूह रुप इस लोक में एकन्द्रिय से प्रचेन्द्रिय पर्यन्त अनन्तानन्त जीव निवासी कर रहे है । उन जीवों की विवेचना अनेक प्रकार से आगम में उल्लिखित है । यहां पर संक्षेप रुप से उनके तीन भेदो की विवेचना की जा रही है ।

बहिरात्मा , अन्तरात्मा और परमात्मा के भेद से जीव तीन भगों में विभ्ांजित किये गयें है । इनमें से शरीर और आत्मा में एकत्व बुध्दि रखने वाले जीव बहिरात्मा मिथ्यादृष्टि जीव है । जो अनादि काल से अपने स्वरुप को न जानकर शरीर को ही अपना स्वरुप समझकर अनादि काल से जन्म -मरण के दु:ख सहन करते हुये संसार सागर में गोता खा रहे हैं ।

अन्तरात्मा के तीन भेद है । उत्तम, मथ्यम एवं जघन्य यह तीनों प्रकार के अन्तरात्मा अनन्त संसार से विमुख, जन्म - मरण के दु:ख से भ्ंयभीत संसार , शरीर , भागों से विरक्त रहकर निरन्तर यथार्थ वस्तू स्वरुप को प्राप्त करने की भावना में तन्मय रहते है यानि मोक्ष मार्ग पर बढते रहते है ।

.७६.

दोनो प्रकार के संग अर्थात चौदह अन्तरंग और दस बाहय इस प्रकार चौवीस प्रकार के परिग्रह से परामुख सविकल्प सभी भावनाओं से विमुक्त सुध्दोपयोग रुपी झूले में निजानन्द रुपी हिलोरे लेने वाली श्रेणी में आरुढ मुनिराज उत्तम अन्तरात्मा है ।

प्रश्न १. जीव कितने प्रकार के होते है ?
उत्तर - बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा के भेद से जीव तीन प्रकार के होते है ।

प्रश्न २. बहिरात्मा जीव किसे कहते है ?
उत्तर - शरीर और आत्मा को एक मानने वाले जीव को बहिरात्मा कहते है ।

प्रश्न ३. अन्तरात्मा किसे कहते है ?

उत्तर - शरीर में रहते हुये उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य संयुक्त अपने अनंत, अखण्ड गुणमय चितस्वरुप को द्रव्य कर्म, भाव कर्म, नौ कर्मो से भिन्न अनुभव करने वाले जीव को अन्तरात्मा कहते है।

प्रश्न ४. अन्तरात्मा के कितने भेद है ?
उत्तर - उत्तम, मध्यम, एवं जधन्य इस प्रकार इसके तीन भेद है।

प्रश्न ५. उत्तम अन्तरात्मा किसे कहते है?
उत्तर - उभय संग विमुक्त सप्तम गुणस्थान से बारहवे गुणस्थान पर्यन्त के शुध्दोपयोगी मुनिराजों को उत्तम अन्तरात्मा कहते है।

प्रश्न ६. संग किसे कहते है ?
उत्तर - धन - धान्यादी बाहय एवं मिथ्यात्वादि अन्तरंग परिग्रह को संग कहते है।

प्रश्न ७. परिग्रह के दो ही भेद होते है क्या ?
उत्तर - मूल में तो मूर्छा परिग्रह है। उत्तर में अनेकों भेद है, परन्तु अपेक्षा से दो भेदो में ही विवेचना की गई है।

प्रश्न ८. बाहय परिग्रह और उसके भेद ?
उत्तर - धन-धान्यादी जड चेतन रुप वैभव को बाहय परिग्रह कहते है। इसके दस भेद निम्न प्रकार है।

(१)क्षेत्र (जमीन) (२)वास्तू (भवन)(३) हिरण्य (४)सुवर्ण (५)धन (६)धान्य(७)दासि (८)दास (९) कुप्य (१०) भांड।

प्रश्न ९. आभ्यन्तर परिग्रह और उसके भेद ?
उत्तर - पर वस्तुओं में अपनत्व बुध्दि ही अन्तरंग परिग्रह है।
इसके १४ भेद निम्न प्रकार है।
(१)मिथ्यात्व (२)क्रोध (३)मान (४)माया (५) लोभ (६)हास्य (७) रति (८)अरति(९)शोक (१०)भय (११)जुगुत्सा (१२)स्त्रीवेद (१३)पुरुष वेद (१४)नपुसंकवेद।

प्रश्न १०. दोनों प्रकार के परिग्रह से मुक्त मुनिराज को उत्तम अन्तरात्मा क्यों कहा ?
उत्तर - जिनके पार तिल-तुस मात्र भी परिग्रह रहता है वह निराकुल नहीं रह सकते है। परिग्रह को ही आचार्यो ने दु:ख का मुल कहा हॉ और उत्तम अन्तरात्मा विकल्प रहित होते है, इसलिए चौबिसों प्रकार के परिग्रह से रहित शुध्दोपयोगी मुनिराजों को ही उत्तम अन्तरात्मा कहते है।

आन्तरात्मा एवं परमात्मा

मध्यम अन्तर आतम है जो, देशव्रती अनगारी।
जघन कहें अविरत समदृष्टि,तीनों शिव मगचारी ॥

सकल निकल परमातम द्वैविध, तिनमें घाति निवारी।
श्री अरहंत सकल परमातम, लोका लोक निहारी ॥ ५ ॥

अन्वयार्थ -(देशव्रती) दूसरी, प्रतिमा से दशवी प्रतिमा धारी श्रावक (अनगारी) ऐलक, ।ुल्लक, आर्यिका माताजी एवं छठवें गुणस्थानवर्ती सामान्य मुनिराज (जे) देशव्रती से लेकर सामान्य मुनिराज तक सभी (मध्यम अन्तर आतम है) मध्यम अन्तर आत्मा है और (अविरत)व्रत रहित (समदृष्टि) समदृष्टि को (जघन कहे) जघन्य अन्तरात्मा कहते है (तीनों)उत्तम, मध्यम एवं जगन्य यह तीनों प्रकार की आत्मा(शिव मगचारी) मोक्षमार्ग पर चलने वाली है (सकल) शरीर सहित प्रकार के है (तिन में) उनमें से जिनने (घाति निवारी) घातिया कर्मो का ।ाय किया है वह (श्री अरहंत सकल परमातम) शरीर सहीत अरहंत परमात्मा है (लोकालोक निहारी) वह अरहंत परमात्मा लोकालोक को देखते है।

.७९.

भावार्थ - अनादि काल से अज्ञान एवं अव्रत के कारण यह जीव संसार सागर में गोता खाता आ रहा है। सौभाग्य से गुरु उपदेश का निमित्त पाकर व्रतों से अलंकृत जो जाता है। दूसरी प्रतिमा से दसवी प्रतिमा पर्यन्त गृहवास में भी रहकर एकदेश मोक्ष मार्ग पर आरुण रहे और अनगारी अर्थात गृह त्यागी ऐलक,क्षुल्लक , आर्यिका तथा प्रमत्त मुनिदशा पर्यन्त यह सभी मध्यम अन्तरात्मा कहे जाते ळे और सच्चे देव शास्त्र गुरु एवं सप्त तत्वों का श्रध्दालू सम्यक्तवाचरण चरित्र (अन्याय अत्याचार एवं अभक्ष्य त्याग) रुप आचरण करने वाला फिर भी अब्रत सम्यग्दृष्टि संज्ञा वाले दान-पूजा आदि क्रियायें में तत्पर भव्यात्माओं को जघन्य अन्तरात्मा कहते है।

परमात्मा के दो भेद है। सकल परमात्मा और निकल परमात्मा। शरीर सहित, चार घातिया कर्म रहित अनन्त दर्शन, ज्ञान, सुख, वीर्य से अलंकृत सर्वज्ञ वीतराग हितोपदेशी अनन्त भगवान को सकल परमात्मा कहते है तथा आठ कर्मो से हमेशा के लिये मुक्त हो गये है, अनन्त विशुध्दता से आत्म गुणों को प्रकट कर लिया है, राग, द्वेष आदि विकारी भाव कर्म एवं ज्ञानावरणादी आठ द्रव्य कर्म तथा शरीर आदि नोकर्म से मुक्त होकर लोक कि अग्र भाग में विराजमान शाश्वत निजानन्द पान करने वाले सिध्द प्रभु को निकल परमात्मा कहते है।

प्रश्न १. मध्यम अन्तर आत्मा किसे कहते है?
उत्तर - देशब्रती श्रावक एवं गृह त्यागी सामान्य मुनिराजों की मध्यम अन्तर आत्मा कहते है।

.८०.

प्रश्न २. देशव्रती किन्हें कहते है ?
उत्तर - अहिंसादि पांच अणुब्रत, दिग् व्रतादि तीन गुणव्रत , सामायिक आदि चार शिक्षाब्रत, इस प्रकार बारह अणुब्रतों का अभिरुची से नियमित पालन करने वाले सम्यदृष्टि श्रावकों को देशब्रती कहते है।

प्रश्न ३. अनगारी किसे कहते है ?
उत्तर - गृह त्यागी ऐलक जी, ।ुल्लक जी, आर्यिक माताजी एवं सामान्य मुनिराजों को अनगारी कहते है।

प्रश्न ४. जघन्य अन्तर आत्मा किसे कहते है ?
उत्तर - पच्चीस दोषों से रहित, आठ गुणों से सहित अन्याय अत्याचार एवं अभक्ष्य के त्यागी वस्तु स्वरुप के श्रध्दालु प्रतिमा बध्द, व्रत रहित सम्यग्दृष्टि भव्यात्माओं को जघन्य अन्तर आत्मा कहते है।

प्रश्न ५. ये तीनों प्रकार के आत्मा मोक्षमार्गी है क्या ?
उत्तर -हॉ यह तीनों प्रकार के अन्तरात्मा मोक्षमार्ग पर अपनी गति से योग्यतानुसार बढने वाले होते है।

प्रश्न ६. परमात्मा के कितने भेद है ?
उत्तर - परमात्मा के दो भेद है इ
१. सकल परमात्मा (२)निकल परमात्मा।

प्रश्न ७. सकल परमात्मा किसे कहते है ?
उत्तर - शरीर सहित सर्वज्ञ, हितोपदेशी, वीतरागी अरहंत भगवान की आत्मा को सकल परमात्मा कहते है।

प्रश्न ८. अर्हन्त भगवान किन्हें कहते है ?
उत्तर - चार घातिया कर्मो से रहित अनन्त गुणों से सहित लोकालोक में अवस्थित समस्त पदार्थो को युगपद् जानने वाले प्रभु को अरहंत परमात्मा कहते है।

प्रश्न ९. निकल परमात्मा किसे कहते है ?
उत्तर - शरीर रहित अनन्त गुण सहित सिध्द भगवान की आत्मा को निकल परमात्मा कहते है।

निकल परमात्मा

ज्ञान शरीर त्रिविध कर्म मल, वर्जित सिध्द महन्त।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगें शर्म अनन्ता ॥
बहिरातमता हेय जान तजि, अन्तर आतम हुजै।
परमातम को ध्याय निरन्तर, जो नित आनन्द पूजै ॥ ६ ॥

अन्वयार्थ- (ज्ञान शरीर) ज्ञान ही जिनका शरीर है (त्रिविध कर्म मल) तीनों प्रकार के कर्म मल से (वर्जित)रहित (महंता सिध्द) विश्व पूज्य सिध्द भगवान (ते) वह विश्व पूज्य सिध्द भगवान (अमल निकल परमातम है) राग-द्वेष एवं शरीर रुपी मल से रहित सिध्द परमात्मा है (शर्म अनन्ता भोगें) जो सिध्द भगवान अनन्तानन्त सुख में निमग्न रहते है (बहिरातमता) बहिरात्मपने को (हेय जान तज) हेय जानकर उसका त्याग करो (अन्तर आतम हूजै) अन्तर आत्म स्वरुप प्राप्ति में लगो (परमातम को निरन्तर ध्याय) परमात्मा का निरन्तर ध्यान करो (जो नित आनन्द पूजै) जो सदैव आनन्द देने वाला है।

अन्वयार्थ- (चेतनता बिन) चैतन्य आदि ज्ञान दर्शनादि से रहित (सो अजीव है) अजीव है (ताकेपंच भेद है) उस अजीव तत्व केपांच भेद है - पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल(पुद्गल पंच वरन) पुद्गल के पांच वर्ण है (रस) पांच रस है (दो गंध)दोगंध है,- सुगन्ध और दुर्गन्ध (बसु फरक जाकेहै) स्पर्श केआठ भेद है (जिय पुद्गल को चलन सहाई) जीव और पुद्गल को चलने में जो सहायक होता है (अनुरुपी धर्म द्रव्य) वह रुपदि रहित धर्म द्रव्य है (तिष्ठत अधर्म सहाई होय) जीव और पुद्गल को चलने में जो सहायक होता है (अनुरुपी धर्म द्रव्य) वह रुपादि रहित धर्म द्रव्य है (तिष्ठत अधर्म सहाई होय) जीव और पुद्गलों को ठहरने में जो सहायक होता है वह अधर्म द्रव्य है (जिन बिन मूर्ति निरुपी) ऐसे अर्धम द्रव्य को भी जिनेन्द्र भगवान ने अरुपी कहा है।

भावार्थ - इस लोक में जिनेन्द्र कथित सप्त तत्व की श्रृखला में ज्ञेय,हेय,उपादेय, ध्येय रुप जीव तत्व की विवेचना समझी। अब चर्चा करनी है ज्ञेय- रुप अजीव तत्व की। अखिल विश्व में चैतन्य गुण से रहित अजीव तत्व व्याप्त है। आचार्य ने पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश काल इन पांच भेदों में अजीव तत्वों को विभाजित किया है। पुद्गल में लाल पीलादि पांच वर्ण्, खट्टा मिठादि पांच रस, सुगन्ध दुर्गन्ध ये दो गंध, हल्का भारी आदि आठ स्पर्श है। इस प्रकार पुद्गल के२० गुण कहे जाते है।

जीव और पुद्गल को जो चलने में उदासीन रुप से सहायक निमित्त बनता है , जैसे मछली के लिये जल, उसे अरुपी धर्म द्रव्य कहते हैं और जीव व पुद्गल को उदासीन रुप से अवस्थित करने में जो निमीत्त बनता है उसे अधर्म द्रव्य कहते है, जैसे थकेहुये पुरुष केलिये वृक्ष की छाया।

प्रश्न १. अजीव किसे कहते है ?

उत्तर - चेतना से रहित तत्व को अजीव कहते है।

प्रश्न २. अजीव तत्व केकितने भेद है ?
उत्तर - पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल ये पांच भेद होते है।

प्रश्न ३. पुद्गल किसे कहते है ?
उत्तर - जो पूरण और गलन स्वभाव वाला हो अर्थात जो उत्पत्ती विनाश रुप परिणमन करता रहता है उसे पुद्गल कहते है।

प्रश्न ४. पुद्गल केगुण कितने है ?
उत्तर - पुद्गल केपांच वर्ण, पांच रस, दो गंध, आठ स्पर्श, इस प्रकार २० गुण है।

प्रश्न ५. पांच वर्ण कौन-कौन से है ?
उत्तर - काला, पीला, नीला, हरा, लाल।

प्रश्न ६. पांच रस कौन-कौन से है ?
उत्तर - खट्टा, मीठा, कडुवा, चरपरा, कषायला।

प्रश्न ७. गंध कितने है ?
उत्तर इ सुगन्ध और दुर्गन्ध दो है।

प्रश्न ८. स्पर्श् केनाम क्या है ?
उत्तर - हल्का, भारी, कठोर, नरम, रुखा, चिकना, ठंडा, गरम।

प्रश्न ९. धर्म द्रव्य किसे कहते है ?
उत्तर - जो जीव और पुद्गल को उदासिन रुप से गमन करने में सहायक हो अर्थात रेल के चलने को पटरी केसमान जो निमित्त होता है उसे धर्मे द्रव्य कहते है।

उत्तर -सेकिण्ड,मिनिट, घडी, घंटा, दिन, रात, पक्ष, मास, वर्ष आदि को व्यवहार काल कहते है।

प्रश्न ६. आस्त्रव किसे कहते है ?
उत्तर - मिथ्यात्वादि बिकार भावों से कर्मो का आत्मा की और आना आस्त्रव कहलाता है।

प्रश्न ७. आस्त्रव केसत्तावन भेद किस प्रकार है ?
उत्तर - पन्द्रह योग, पांच मिथ्यात्व, बारह अविरति, पच्चीस कषायें यह सब मिलकर सत्तावन भेद है।

प्रश्न ८. आस्त्रव केऔर भी भेद है क्या ?
उत्तर - आस्त्रव केमूल में दो भ्ेद है। एक शुभास्त्रव दुसरा अशुभास्त्रव है।

प्रश्न ९. पन्द्रह योगों केनाम किस प्रकार है ?
उत्तर - मनोयोग के चार-सत्य मनोयाग, असत्य मनोयोग, उभय मनोयोग एवं अनुभय मनोयोग।

वचनयोग के चार इ सत्य वचनयोग, असत्य वचनयोग, उभय वचनयोग, अनुभय वचनयोग।

कामयोग केसात - औदारिक, औदारिक मिश्र , बैक्रियिक, बैक्रियिक मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र कार्माण।

प्रश्न १०. मिथ्यात्व केपांच भ्ैद किस प्रकार है ?
उत्तर - एकान्त, विपरित, वैनयिक, संशय, अज्ञान।

प्रश्न ११. अविरति किसे कहते है तथा किस प्रकार है ?

उत्तर - असंयम को अविरति कहते। स्पर्श्न, रसना, धा्रण, चक्षु, कर्ण् एवं मन इन छह के ऊपर नियंत्रण नहीं करना एवं पृथ्वी कायिक, जल कायिक, अग्नि कायिक, वायु कायिक, वनस्पति कायिक, त्रस कायिक इनकी रक्षा नहीं करना यह १२ अविरती है।

प्रश्न १२. कषायों के२५ भेद किस प्रकार है ?
उत्तर - क्रोध, मान, माया, लोभ इन एक-एक के चार इ चार भेद, अनन्तानुबंध , अप्रत्यख्यान, प्रत्यख्यान एवं संज्वलन के भेद से इस प्रकार १६ कषाय और हास्य, रति, अरती, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपंशकवेद के भेद से नौ प्रकार। इस तरह कषायों के२५ भेद हुए।

प्रश्न १३. प्रमाद किसे कहते है ?
उत्तर - आलस्य (शिथिलता) को प्रमाद कहते है।

प्रश्न १४. प्रमाद के कितने भेद है ?
उत्तर - प्रमाद के १५ भेद है। चार विकथा, चार कषाय, पांच पापादि इन्द्रिय जन्य लम्पटता, निद्रा, स्नेह।

प्रश्न १५. विकथा किसे कहते है?
उत्तर -संसार वर्धक कथओं को विकथा कहते है।

प्रश्न १६. विकथाओं के नाम किस प्रकार है ?
उत्तर - राष्ट्र कथा, स्त्री कथा, भोजन कथा, अवनिपाल कथा अर्थात चोर कथा, ये चार विकथायें है।

.८६.

आस्त्रव त्याग और बंध संवर निर्जरा

ये हि आतम को दुख कारण, तातें इनको तजिये।
जीव प्रदेश बंधे विधि सों, सो बंधन कबहु न सजिये ॥
शम दमतें जो कर्म न आवै, सो संवर आदरिये।
तप बलतै विधि झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिये ॥ ९ ॥

अन्वयार्थ - (ये ही) जिस मिथ्यात्व की विवेचना की जा चुकी है वह (आतम को दुख कारण) आत्मा को दुख पहुँचाने में निमित्त है। (तात्ै इनको तजिये) इसलिए आश्रव के कारणों का परित्याग कर देना चाहिए। (जीव प्रदेश बंधे विधि सों) जीव के प्रदेश और कर्मो के प्रदेश दोनों का मिलना (सो बंधन) वह बंध है (कबहु न सजिये)(पूद्गल परमाणुओं का आत्मा के साथ बंध) कभी नहीं करना चाहिए। (सम दम तै) समता पूर्वक विभाव परिणामों का दमन करने से (जो कर्म न आवै) जो कर्मो का आना अवरुध्द हो जाता है (सोंसंवर आदिरिये) ऐसे संवर कासतत आचरण करना चाहिऐ (तप बल तै) तपस्या की श्क्ति से (विधी झरन निर्जरा) सदा कर्मो का झरना निर्जरा है (ताहि) उस निर्जरा का (सदा आचरिये) सदा आचरण करना चाहिये।

भावार्थ - इस संसार सागरमें अनादि काल से गोते खाते हुए सभी जीव अनन्त दु:खो को सहन करते आ रीहे हे । इन दुखों का मूल कारण मिथ्यात्व है । अत: मिथ्यात्व को हमेशा-हमेशा के लिये तिलांजलि देना है । आस्त्रव और बंध में मिथ्यात्व और कषाय हि कारण बनते है । जीव के रागादि परिणामों का निमित्त पाकरउ कर्मै प्रदेशरें का आत्म प्रदेशों के साथ् एक ।ोत्रावगाही हो जाना ही बंध है । इस बंध के कारण ही ज्ञायक स्वभावी चैतन्य आत्मा जन्म-मरण आदि सांसारिक दु:खो में उलझ

(१) जाता है । ऐसा कर्म प्रदेशों का बंध किसी भी स्थिती मे हमें नहीं करना है । समता स्वभाव से विभाव परिणामों का दमन या निरोध ही संवर है । स्वभावाश्रित इस संवर का हमें भली प्रकार समादर करना है और भेद विज्ञान पूर्वक तपस्या के बल से कर्मो को ।ाय करना ही निर्जरा है ऐसे परमोपकारी निर्जरा का सदेव आचरण करना चाहिए ।

`

प्रश्न १. आत्मा को दु:ख देने वाला कौन् है ?
उत्तर - आत्मा को दुख देने वाला आस्त्रव है ।

प्रश्न २. आस्त्रव का हमें क्या करना चाहिये ?
उत्तर - आस्त्रव का हमें त्याग करना चाहिये ।

प्रश्न ३. शुभ्ास्त्रव का भी त्याग करना है क्या ?
उत्तर - पुरुषार्थ पूर्वक अशुभास्त्रव का त्याग किया जाता है । आत्म स्वरुप में निमग्न होने पर शुभास्त्रव तो सहज में छुट जाता है ।

प्रश्न ४. बन्ध किसे कहते है ?
उत्तर - कर्मो का आत्मा के साथ मेल होने को बन्ध कहते है ।

प्रश्न ५. संवर किसे कहते है ?
उत्तर - राग-द्वेष मय विभ्ाव भावों तथा द्रव्य कर्म का अभाव संवर है ।

प्रश्न ६. निर्जरा किसे कहते है ?
उत्तर - सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र एवं तपस्या के द्वारा पूर्व संचित कर्म प्रदेशों का ।ाय होना निर्जरा है ।

मोक्ष और व्यवहार सम्यक्त्व

सकल कर्म तै रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी ।
इह विध जो सरधा तत्वन की, सी समकित व्यवहारी ॥
देव जिनेन्द्र गुरु परिग्रह बिन, धर्म दया जुत सारो ।
ये हु मान समकित को कारण, अष्ट अंग जुत धारो । १० ।

अन्वयार्थ - (सकल कर्म तैं रहित अवस्था) ज्ञानावारणादि समस्त कर्मो से रहित अवस्था (सो शिव) वह मोक्ष स्वरुप है (थिर सुखकारी) और अक्षुण्ण अतिन्द्रिय सुखदायक है (इह विध जो सरधा तत्वन की) इस प्रकार से जो सातों तत्वो की यथार्थ श्रध्दा है (सो समकित व्यवहारी) वह व्यवहारी सम्यग्दर्शन है (देव जिनेन्द्र) अट्ठारह दोष राहित सर्वज्ञ वीतरागी देव (परिग्रह बिन गुरु) (पिछी, कमण्डलु औार शास्त्र के अतिरिक्त) समस्त परिग्रह के त्यागी गुरु (दया जुत धर्म) अहिंसा प्रधज्ञन वीतराग धर्म (सारो) उत्कृष्ट है (ये हु मान समकित को कारण) ये चारों अर्थात सच्चे देव, शास्त्र, गुरु, धर्म ही सम्यक्त्व का कारण है, ऐसा मानकर यहां (अष्ट अंग जुत धारो) सम्यग्दर्शन आठ अंगो सहित धारण करना चाहिये ।

भावार्थ - ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नामख गोत्र एवं अन्तरएियं इन आठों कर्मो से वेष्ठित (घिरे हुये) संसार आत्मा चारों गति चौश्रासी लाख योनी में विभिन्न प्रकार की पर्यायों से परिणमन करता हुआ दुख पा रहा है, किन्तु जो आत्मा रत्नत्रय रुप पुरुषार्थ केबल से अष्ट कर्म रुपी किले को खंड-खंड कर परमात्मा पद को प्राप्त होकर हमेशा के लिए प्रतिक्षण असीम आनन्द का अनुभव करते हुये लोक केअग्र भाग में सुशोभित होते है । इसी का नाम आचार्यो ने स्वभावाश्रित सांसारिक भाव से रहित मोक्ष अवस्था अर्थात मोक्ष तत्व कहा है ।

.८९.

इस प्रकार सातों तत्वों की यथावत् आस्था से व्यवहार सम्यग्दर्शन धारण कर जो सम्यग्दृष्टि भव्यात्मा अट्ठारह दोष रहित छ्यालीस गुण सहित सर्वज्ञ वीतरागी एवं हितोपदेशी सच्चे जिनेन्द्र देव की उपासना करता है । एवं विषय कषाय तथा आरम्भ परिग्रह से विरक्त आत्म स्वरुप में अनुरक्त आगम का स्याद्वाद शैली से प्रतिपादन करने वाले दिगम्बर मुनिराजों के द्वारा निर्देशित मार्ग का अनुसरण् करता है और तीर्थकर देव केमुखारविन्द से मुखरित द्वादशांग वाणी का स्याद्वाद नय प्रमाण से निरन्तर मन्थन करता हुआ तत्व निर्णय करता है, साथ ही अहिंसा प्रधान समस्त भव्य प्राणियों को सुखद जन-जन उपकारी वीतराग धर्म को धारण करने के लिये तत्पर रहता है, वही सम्यक्त्व परिणति है ।

इस प्रकार सच्चे देव, शास्त्र, गुरु एवं धर्म केप्रति आस्था ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में कारण है, क्यों कि तत्व निर्णय में सम्यग्दृष्टि जीव की आस्था स्वाभाविक रुप से अवगाढ इनके प्रति रहती है । अत: हमें अष्ट अंगों से समन्वित ऐसे सम्यग्दर्शन को अवश्य धारण करना इष्ट है तथा अपना धर्म पुराषार्थ अपने आप में जगाकर मोक्ष पुरुषार्थ की और अग्रसार होना चाहिये ।

प्रश्न १. मोक्ष तत्व किसे कहते है ?

उत्तर- सम्पूर्ण् कर्मो से पूर्ण विमुक्त होकर स्व-स्व्रभाव में रहना मोक्ष तत्व है ।

प्रश्न २. मोक्ष में जीव क्या करते है ?

.९०.

उत्तर - मोक्ष होने पर जीव सहज विशुध्द अनन्त गूणों से युक्त निराकुल अक्षय आनन्द का उपभोग करते है ।

प्रश्न ३. क्या मोक्ष का आनन्द हमारे इन्द्रिय जन्य आनन्द सदृश ही है ?

उत्तर - मोक्ष का आनन्द उपमातीत अक्षय है, स्वयं से उत्पन्न होने वाला है, जबकि इन्द्रिय जन्य सुख ।णिक विनाशीक है। मोक्ष सुख की तुलना इन्द्रिय जन्म सुख से नहीं की जा सकती है।

प्रश्न ४. मोक्ष से जीव लौटकर आते है क्या ?
उत्तर - मोक्ष अवस्था प्राप्त करने के बाद कोई भी पुन: संसार अवस्था में लौटकर नाहीं आतेक्योंकी (जो आनन्द प्रतिक्षण मोक्ष अवस्था में प्राप्त होता है, उसकी संसार में कल्पना भी नहीं की जा सकती है। दूसरी बात यह भी है कि मोक्ष में जीव पूर्ण शुध्द अवस्था को प्राप्त करके जाता हे) एक बार शुध्द अवस्थ्ां को प्राप्त हो जाने केपश्चात् अशुध्द अवस्था नहीं होती।

प्रश्न ५. व्यवहार सम्यग्दर्शन किसे कहते है ?
उत्तर - उपरोक्त तत्वों काज्ञेय, हेय, उपादेय, ध्येय रुप से यथार्थ श्रध्दान करना व्यवहार सम्यग्दर्शन है।

प्रश्न ६. सच्चे देव किन्हें कहते है ?
उत्तर- सर्वज्ञ, वीतरागी, हितोपदेशी अट्ठारह दोषों से रहित जिनेन्द्र भगवान को सच्चे देव कहते है।

प्रश्न ७. सच्चे शास्त्र किसे कहते है ?

उत्तर - तीर्थकरों की दिव्य ध्वनि से ध्वनित द्वादशांग रुप श्रुत ज्ञान से वीतरागी आचार्यो द्वारा रचित शास्त्रों की सच्चे शास्त्र कहते है।

प्रश्न ८. सच्चे गुरु किन्हें कहते है ?
उत्तर - विषय कषाय एवं आरम्भ परिग्रह से मुक्त तथा अट्ठाईस मूल गुणों से युक्त दिगम्बर मुनिराजों को सच्चे गुरु कहते है।

प्रश्न ९. सच्चा धर्म किसे कहते है ?
उत्तर - सच्चे सुख केजनक अहिंसा प्रधान वीतराग धर्म की सच्चा धर्म कहते है।

प्रश्न १०. सच्चे देव ,शास्त्र गुरु एवं धर्म की आस्थ्ां से सम्यग्दृष्टि जीव का क्या मतलब है।
उत्तर- सम्यग्दृष्टि जीव सच्चे देव, शास्त्र , गुरु एवं धर्म की आस्था पूर्वक अपने ज्ञान एवं आचरण को निर्मल बनाने का पुरुषार्थ करता है।

प्रश्न ११. सम्यग्दर्श्न केकितने अंग है और यह कितने दोष रहित है ?
उत्तर- सम्यग्दर्शन केआठ अंग है, और यह दर्शन २५ दोषों से रहित होता है।

प्रश्न १२. सम्यग्दर्श्न की प्राप्ति किन कारणों से होती है ?

उत्तर - सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में मूल कारण स्वरुप श्रध्दान एवं सप्त प्रकृतियों का उपशम, ।ाय, ।ि्योपशम है तथा इनके अनन्तर तत्व श्रध्दान, देव, शास्त्र, गुरु समागम, धर्मोपदेश, जाति स्मरण, वेदना, संस्कार आदि अनेकों कारण कहे जा सकते है ।

प्रश्न १३. गतियों की अपेक्षा सम्यक्त्वीत्पत्ति के कारण कितने है ?

उत्तर - सम्यक्त्वांत्पत्ति के बाहय साधन या कारण कई प्रकार के होते है जैसे-नरक गति में तीसरें नरक तक, जाति स्मरण, धर्म श्रवण और दु:खानुभव ये तीन तथा चौथे से सातवें नरक तक जाति स्मरण और दु:खानुभव ये दो साधन है। तिर्यञ्चगति और मनुष्यगति में जाति स्मरण, धर्म श्रवण औश्र जिनबिम्ब दर्श्न ये तीन साधन है । देवगति में बारहवें स्वर्ग तक जातिस्मरण, धर्म श्रवण, जिन कल्याणक दर्शन और देवर्ध्दि दर्शन ये चार साधन है, तेरहवे स्वर्ग से सोलहवे स्वर्ग पर्यन्त देवर्ध्दि दर्श्न को छोडकर शेष तीन तथा नवग्रैवेयको में जातिस्मरण और धर्म श्रवण ये दो साधन है । इसकेआगे सम्यग्दृष्टि जीव ही उत्पन्न होते है ।

प्रश्न १४. लब्धि किसे कहते है और उसके कितने भेद है ?

उत्तर - प्राप्ति अर्थात सम्यक्त्व ग्रहण के योग्य सामग्री की प्राप्ति को लब्धि कहते है । लब्धियों के पांच भ्ेद है ।

क्षयोपशम, २. विशुध्दि. ३.देशना, ४. प्रायोग्य, ५. करणालब्धि ।

प्रश्न १५. पांचो लब्धियों का अर्थ सरल शब्दों में स्पष्ट करो ?

उत्तर - क्षयोपशम लब्धि - अशुभ कर्मो की अनुभाग शक्ति का प्रतिसमय अनन्तगुणा हीन होकर, उदीरणा को प्राप्त होना ।ि्योपशम लब्धि है। इससे उत्तरोत्तर परिणाम निर्मल होते है ।

विशुध्दि लब्धि -निर्मलता विशेष को या साता वेदनीय आदि प्रशस्त प्रकृतीयों के बंन्ध्ा में कारणभूत परिणामों की प्राप्ति को विशुध्दि लब्धिकहते है ।

देशना लब्धि - उपदेश ग्रहण करने की ।ामता को देशनालब्धि कहते है । छह द्रव्य और पदार्थों के ज्ञाता गुरु के द्वारा उपदृष्टि अर्थ को अवधारण करने को देशना लब्धि कहते है ।

प्रायोग्य लब्धि - आयु कर्म को छोडकर शेष सभी कर्मो की स्थिती का अनन्त: कोडाकोडी सागर प्रमाण कर देना और अशुभ कर्मो में ये घातिया कर्मो के अनुभाग को लता और दारु इन दो स्थ्ानगत तथा अघातिया कर्मो के अनुभाग को नीम और कांजी इन दो स्थानगत कर देना प्रायोग्य लब्धि है ।

करण लब्धि - करण का अर्थ परिणाम है अर्थात वे परिणाम जो नियम से प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में कारण है उनकी प्राप्ति को करण लब्धि कहते है ।

प्रश्न १६. क्या सभी जीवों के पांचो लब्धि संभ्व है ?

उत्तर - अभव्य मिथ्यादृष्टि जीव के करण लब्धि को छोडकर शेष चार लब्धि हो सकता है लेकिन जो सम्यग्दर्शन के सम्मुख है, ऐसे भव्य जीव को ही ५ लब्धि प्राप्त होती है ।

सम्यक्त्व के पच्चीस दोष और आठ गुण

वसुमद टारि निवारी त्रिशठता,षट अनायतन त्यागो ।
शंकादिक बसु दोष बिना, संवेगादिक चित्त पागो ।
अष्ट अंग अरु दोष पच्चीसों, तिन संक्षेपै कहिये ।
बिन जाने तें दोष गुणन को , कैसे तजिये गहिये ॥ ११ ॥

.९४.

अन्वयार्थ - (वसु मद टारि) आठ मदों को छोडकर (त्रि शठता निवारी) तीन मूढता से परे होकर (षट् अनायतन त्यागो) छह अनायतनों का त्याग करो । (मंकादिक) शंकां ।ादि (वसु दोष बिना) आठ दोषों से रहित (शंवेगादिक चितपागो) संवेग अनुकम्पा आदि गुणों को धारण करना चाहिये । (अष्ट अंग अर दोष पच्चीसों) आठ अंग और २५ दोष है । (तिन संक्षेपै कहिये) उनका संक्षेप से विवेचन किया जाता है (बिन जाने तै) बिना समझे (दोष गुणन को) दोष और गुणों को (कैसे तजिये गहिये) किस प्रकार त्याग और ग्रहण किया जा सकता है ।

भावार्थ - प्रत्येक भवयात्मा निरन्तर मोक्ष सुख पाने क`लिये लालाकयत है । सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक चारित्र इन तीनों की एकता मोक्ष मार्ग है । इनमें प्रथम स्थान सम्यग्दर्शन को प्राप्त है , जिसे मोक्ष महल की प्रथम सीढी कहां जाता है । करणानुयोग की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन के मूल में तीन भेद है । उपशम, ।ायोपशम, ।ायिक । अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ एवं मिथ्यात्व सम्यक मिथ्यात्व और सम्यक प्रकृति इन तीनों के ।ाय होने पर ।ायिक सम्यक्त्व और उपशम होने पर उपशम तथा सवंघाती पकृतिंयों का उदयाभावी ।ाय, उन्ही का सद्वस्था रुप उपशम और देयाघसाती सम्यक प्रकृति के उदय में ।ायोपशम सम्यक्त्व होता है । ऐसा सम्यक्त्व धारी जीव पच्चीस दोषों से रहित और आठ मूल गुणों से सहित होता है । पच्चीस दोषों में आठ मद, आठ शंकादि दोष, तीन मूढता और छह अनायतन इस प्रकार इन पच्चीस दोषोंसे रहित एवं संवेग, अनुकम्पा आदि भावना के साथ अष्ट गुणों से विभूषित सम्यग्दृष्टि जीव होता है । उन पच्चीस दोष और आठ मदों की विवेचना संक्षेप से की जा रही है, क्योकि दोष और गंणों का परिज्ञान किये बिना गुणो् को अपनाना और दोषों का छाटना संभव नहीं है ।

.९५.

प्रश्न १. दोष किसे कहते है ?

उत्तर - स्वरुप प्राप्ति में बाधक कारणों को दोष् कहते है या विकार भाव को दोष कहते है ।

प्रश्न २. शंकादि दोष कितने होते है ?

उत्तर - ये आठ होते है । (१) शंका (२)आकांक्षा (३)विचीकित्सा (४)मूढदृष्टि (५)अनुपगूहन (६)अस्थितिकरण (७)अवात्सल्य (८)अप्रभावना ।

प्रश्न ३. मूढता किसे कहते है एवं कितनी है ?

उत्तर - देखो देखी बिना विवेक के क्रिया करने को मूढता कहते है । मूढता तीन है (१)देव मूढता (२)गुरु मूढता (३)लोक मूढता ।

प्रश्न ४. अनायतन किसे कहते, कितने होते है ?

उत्तर - अपूज्य स्थ्ांन एवं पुरुष अर्थात कुदेव, कुशास्त्र, कुगुरु तथा उनकेप्रशंसकों को अनायतन कहते है। अनायतन छह है (१)कुगुरु (२) कुदेव (३) कुगुरु सेवक (४) कुधर्म (५) कुदेव सेवक (६) कुधर्म सेवक।

प्रश्न ५. मद किसे कहते है एवं कितने होते है ?
उत्तर - अहंभाव को मद कहते है। मद आठ होते है, उनमे नाम निम्न प्रकार है (१) जाति (२) कुल (३) पूजा (४) रुप (५) ज्ञान (६) विद्या (७) बल (८)तप।

.९६.

प्रश्न ६. प्रशम किसे कहते है ?
उत्तर - कषायों की मन्दता अर्थात क्रोधादि कषायों का उपशम होना प्रशम है।

प्रश्न ७. संवेग किसे कहते है ?
उत्तर - संसार शरीर भोगों से भ्ंयभ्ीत होना ही संवेग है (भद्र परिणाम)

प्रश्न ८. अनुकम्पा किसे कहते है ?
उत्तर - मिथ्यात्व से प्रेरित पाप कर्म से पीडित दु:खी जीवों को देखकर मन में करुणा या दया का भ्ंाव आना अनुकम्पा है। (वात्सल्य भाव)

प्रश्न ९. आस्तिक्य किसे कहते है ?
उत्तर - षट् द्रव्य रुप लोक में विश्वास रखते हुये स्वात्म स्वरुप की आस्था जगाना ही आस्तिक्य है। (सत्य निष्ठा)

प्रश्न १०. पच्चीस दोषों को जानने की क्या आवश्यक्ता है ?
उत्तर - पच्चीस दोषों का परिज्ञान किये बिना उनसे मुक्त होना संभव नहीं है। अत:पच्चीस दोषों को समझकर ही छोडा जा सकता है।

प्रश्न ११. आठ अंगो को समझना क्यों आवश्यक है ?
उत्तर - आठ अंगो को समझे बिना अपने में धारण करना, उनको अपने जीवन में स्थान देना श्क्य नहीं है। अत: अपने जीवन में उतारनें केलिये आठ अंगो का ज्ञान आवश्यक है।

.९७.

आठ अंग

जिन वच में शंका न धार, वृष भव सुख वांक्षा भानै।
मुनि तन मलिन न देख घिनावै, तत्व कुतत्व पिछाने ॥
निज गुण अरु पर औगुण ढांके, वा निज धर्म बढावे।
कामादिक कर वृषितैं चिगतें, निज पर को सु दिढावैं ॥ १२ ॥
धर्मी सों गौ वच्छ प्रीति सम, कर जिन धर्म दिपावै।
इन गुण्ंतै विपरीत दौष वसु, तिनको सतत् खिपावे ॥

अन्वयार्थ - (जिन वच में शंका न धार) जिनेंन्द्र भगवान के वचनों में शेंका नहीं करना (वृष) धर्म को धारण करके (भव सुख वांक्षा न भ्ांनै) सांसारिक सुख्ं की इच्छा न करना (मुनि तन मलिन न देख घिनावै) मुनि महाराज के मलिन शरीर को देखकर घृणा नहीं करना (तत्व कुतत्व पिछानै) तत्व कुतत्व में विवेक रखना चाहिये । (निज गुण) अपने गुण (अरु पर औगुण ढांकै) और दूसरों के अवगुणों को ढांकना (वा) अथवा (निज धर्म बढावें) आत्म धर्म, वीतराग धर्म की वृध्दी करना चाहिये । (कामादिक कर वृषतै चिगतै) काम, क्रोधादि विकारों का निमित्त पाकर स्वयं अपने मन को और दूसरे के मन को धर्म से विचलित होने पर (निज पर को) अपने आपको या अन्य किसी को (सुदुढावै) धर्म मार्ग पर स्थित करें (धर्मी सों) धर्मात्मा जीवों से (गौ वच्छ प्रीतिसम) गाय बछडें की प्रीति के समान (कर जिन धर्म दिपावैं) जिन धर्म को प्रकाशित करना चाहियें (इन गुणतैं) निशंकित आदि गुणों से (विपरीत वसु दोष)
विपरीत आठ दोष है (तिनको सतत खिपावै)उनको परिपूर्ण नष्ट करना चाहिये ।

भावार्थ्ं - जिस प्रकार न्यून अक्षर मन्त्र विष वेदना को करने में समर्थ नहीं है , ठीक उसी प्रकार अंग हीन सम्यग्दर्शन भी जन्म सन्तति का विच्छेद करनें में सक्षम नही होता । सांगोपांग सम्यग्दर्श्न की महिमा मनुष्य क्या देवों मे भी पायी जाती है ।

.९८.

सम्यग्दर्शन के अभाव में ज्ञान और चारित्र का कोई महत्व नहीं है, परन्तु अंग विहोन सम्यग्दर्शन का महत्व भी निर्मूल है । जिनेन्द्र भगवान की वाणी में अड्ि्ग आस्था निशंकित नाम का पहला अंग है । नियम, व्रत, विधि, विधान आदि धार्मिक अनंष्ठानरों से किसी प्रकार के इन्द्रिय सुखों की कांक्षा नही करना निकांक्षित नाम का दुसरा अंग है । मूनिराज आदि के मलिन शरीर एव कुष्ट आदि रोग से पीडित रोगी तथा अन्य घृणीत पदार्थो में ग्लानि नहीं करना निर्विचिकित्सा अंग है । मिथ्या मतियों की कपोल कल्पना या चमत्कारों से प्रभ्ांवित न होकर वस्तू अथवा में दृढ आस्थ्ां रखना अमूढ दृष्टि नामक चतुर्थ अंग है । अपने में अनेक विशेषताये होने पर भी अपनी प्रशं्सा नहीं करना और दूसरों में सर्व गुण्ो का अभ्ांव होने पर भी निन्दा नहीं करना यह पांचवा उपगूहन अंग है । आत्मा गुणों की रक्ष्ां करते हुये काम क्रोधादि से स्वयं का मन या अन्य किसी साधर्मी भाई का मन ध्ंर्म से विचलित हो ने पर जैसे बने तैसे स्व पर को स्थिर रखना यही छटवॉ स्थितिकरण अंग है । आत्म गुणों में अभिरुचि रखते हुये विश्व के सभी प्राणियों को अपने समान समझकर उनसे मैत्री भाव रखना यह सम्यग्दर्शन का सातवां वात्सल्य अंग है । रत्नत्र्ंय के द्वारा आत्म गुणों को विकास में लाते हूये दान , पूजा, सम्यग्ज्ञान प्रभ्ांवना हेतु शिक्षण शिविर धार्मिक विद्यालय पाठशाला आदि के द्वारा धर्म के प्रति भव्य प्राणियों् की आस्था बढाना सम्यग्दर्शन का प्रभावना नाम का अष्टम अंग है । इन आठों अंगो के स्वरुप को समझकर हमें अपने जीवन में उतारना और इनसे विपरीत जो शंकादिक आठ दोष है उनको प्रयत्न पूर्वक नष्ट करना ही सच्चा सम्यग्दर्श्न आराध्य है ।

.९९.

प्रश्न १. अंग किसे कहते है एवं सम्यग्दर्शन के अंग कितने होते है ?

उत्तर - किसी भ्ी वस्तू क अभिन्न हिस्से कसे अंग कहते है । सम्यग्दर्शन क (१)निशंकित (२) निकांक्षित (३)निर्विचिकित्सा (४) अमूढ दृष्टि (५)उपगूहन (६)स्थितिकरण (७)वात्सल्य और (८) प्रभावना, इस प्रकार आठ अंग होते है ।

प्रश्न २. निशंकित अंग किसे कहते है ?
उत्तर - जिनेन्द्र भगवान की वाणी में किसी प्रकार की शंका नहीं करना निशंकित अंग है।

प्रश्न ३. निकांक्षित अंग किसे कहते है ?
उत्तर - धर्म को घारण करके फलस्वरुप सांसारिक सुखों की वांछा न करना निकांक्षित अंग है।

प्रश्न ४. निर्विचिकित्सा अंग किसे कहते है ?
उत्तर - मुनिराज आदि के मलिन शरीर या अन्य मलिन वस्तूओं को देखकर ग्लानि नहीं करना निर्विचिकित्सा अग है।

प्रश्न ५. अमूढ दृष्टी अंग किसे कहते है ?
उत्तर - वस्तु व्यवस्था में आर्ष पध्दत से तत्व कुतत्व का निर्णय कर आस्था रखना अमुढ दृष्टि अंग है।

प्रश्न ६. उपगूहन अंग किसे कहते है ?
उत्तर - आत्म गुणों का आश्रय लेते हुये अपनी प्रशंसा और दूसरों की निन्दा नहीं करना उपगूहन अंग है।

प्रश्न ७. स्थितीकरण अंग किसे कहते है ?

उत्तर - अपने स्वभाव में स्थिर रहने की भावना से, कामादि विकारों से अपना या अन्य किसी साधर्मी भाई का मन धर्म से विचलित हो तो उसे जैसे भी बने वैसे अपने कर्तव्य में स्थिर रखना यही स्थितकरण अंग है।

प्रश्न ८. वात्सल्य अंग किसे कहते है?
उत्तर - निजात्म गूणों में प्रीती रखतें हुए विश्वश के सभी प्राणियों, साधर्मी भाई बन्धुओं में प्रेम भाव रखना वात्सल्य अंग है।

प्रश्न ९. प्रभावना अंग किसे कहते है ?
उत्तर - रत्नत्रय के द्वारा आत्मस्वरुप की निर्मलता एवं दान पूजा तथा सम्यक ज्ञान के प्रचार प्रसार आदि के आयाजन कर भव्यात्माओं के मन में धर्म का आकर्षक प्रभ्ाव जमाना प्रभावना अंग है।

आठ मद

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै।
मद न रुप की, मद न ज्ञान को, धन बल को मद भानै ॥ १३ ॥

तप को मद न, मद जु प्रभुता को, करै न सो निज जानै।
मद धारें तो यही दोष वसु, समकित को मल ठाने ॥

अन्वयार्थ - (पिता भूप वा मातुल) अपना पिता भूपति अथवा मामा राजा (जो होय तो मद न भानै) यदि होय तो अभिमान नहीं करना चाहिए (रुप को मद न) अगर अपना रुप सुन्दर हो तो उसका मद नहीं करना चाहिए। (मद ज्ञान को न) ज्ञान का मद नहीं करना चाहिए (धन बल को मद न भानै) धन और बल का मद नहीं करना चाहिए (तप को मद न) तपस्या का मद नहीं करना चाहिए (प्रभुता को मद न) अपने

स्वभाव अथवा ऐश्वर्य का मद नहीं करना चाहिए। (करै सौ न निज जानै) इन आठ प्रकार का जो अभिमान नहीं करता वही अपने स्वरुप को जान सकता है। (मद धारें तो यही दोष वसु) यदि आठ मदों को धारण करें तो इन्ही आठ मदों से उत्पन्न हुआ दोष। (समकित को मल ठानै) सम्यग्दर्शन को मलिन बना देता है।

भावार्थ - निज सम्पत्ति ऋजुता गुण को भूलकर अभिमान की संगति में निरन्तर संसार सागर में यह जीव गोता खा रहा है। ये आठ मद सम्यग्दर्शन के घतक है, अत:
इन्हें अपने हृदय में स्थान देना अनुचित है। जाति, कुल, ज्ञान, धन, बल, तप, प्रभुता के मद में मस्त होकर स्वात्म गुणों को भूंल हुए है। जो सम्यक पुरुषार्थ कर इन मदों को तिलात्र्जलि देकर रत्नत्रय रुप पंरुषार्थ करता है, वह मोक्ष पुरुषर्थ सिध्द करने में सफल हो जाता है। और जो प्राणी इन आठ मदो ंको अपने आप में स्थान देता है, वह अपने सम्यक्त्व को मलिन करके मोक्ष मार्ग में कांटे बोता है।

प्रश्न १. कूल मद किसे कहते है ?
उत्तर - अपने पिता पक्ष में राजा आदि महान पुरुष हों या मै उच्च कुल वाला हूँ ऐसा अभिमान करना कुल मद है।

प्रश्न २. जाति मद किसे कहते है ?
उत्तर - अपने मामा के कुल में कोई विशेष पद पर आसीन हो या विशेष समृध्दता हो तो मेरे मामा इतने समृध्दशाली है, लागों के सामने ऐसा अभ्मिान करना जाति मद कहलाता है।

प्रश्न ३. रुप मद किसे कहते है ?

उत्तर - अपनी सुन्दर काया को देख कर मेरे समान कोई सुन्दर नहीं है ऐसा गर्व करना रुप मंद है।

प्रश्न ४. ज्ञान मद किसे कहते है ?
उत्तर - थोडे शास्त्र पढकर या लौकि उपाधियां प्राप्त कर अपने आपको ज्ञानी मानना और दूसरों को मूर्ख समझना ज्ञान मद है।

प्रश्न ५. धन मद किसे कहते है ?
उत्तर - पुण्य कर्म से लक्ष्मी को पाकर मै इतना ऐश्वर्यशाली हूँ तुम क्या समझते हो, तुम जैसों को खरीद लुँगा ऐसा अभ्मिान करना धन मद है।

प्रश्न ६. बल मद किसे कहते है ?
उत्तर - जवानी के जोश में, निर्बलों के बीच में मै बलवान हूँ, मेरे में अपार शक्ति है, ऐसा अभिमान करना बल मद है।

प्रश्न ७. तप मद किसे कहते ?
उत्तर - व्रत उपवास आदि करके लागों से कहना तुम क्या समझतें होमै मासोपवासी हूँ, मै बारह-बारह घंटे ध्यान करता हूँ, ऐसा करने वालों को तप मद कहते है।

प्रश्न ८. प्रभुता मद किसे कहते है ?
उत्तर - लागों के मुख से अपनी ख्याति सुनकर ऐसा अनुभव करनाउकि मेरा सारे विश्व मे वडप्पन या नाम हो रहा है , यह प्रभूता मद है।

प्रश्न ९. आठ मदों का क्या नाम है ?
उत्तर - यह आठ मद सम्यग्दर्शन को मलिन बनाने है।

.१०३.

षट् अनायतन तीन मूढता

कूगुरु कुदुव कुवृष सेवक की, नहिं प्रशंस उचरे है।
जिनमुनि जिन श्रृत बिन, कुगूरादिक तिन्हें न नमन करें है ॥ १४ ॥

अन्वयार्थ - (कुगुरु कुदेव कुवृष सेवक की) खोटे गुरु , खोटे देव, और खोटे धर्म तथा इनके सेवकों की (प्रशंसा नहिं उचरें है) प्रशंसा नहीं करना चाहिये (जिन मुनि जिन श्रुत बिन) जिनेन्द्र भगवान दिगम्बर मुनि और जिन बाणी के अतिरिक्त (कुगुरुरादिक) जो कुगुरु आदि है (तन्हिं नउनमन करे है) उन्हें कभी नमस्कार नहीं करना अनायतन त्याग है।

भावार्थ - अनादि काल से इस जव ने खोटे गुरुओं के उपदेशनुसार आचरण करके,कुदेवों को सेवा भक्ति करके खोटे धर्म रुप आचरण करके एवं इन तीनो को मानने वालों की संगति व प्रशंसा काके अहर्निश संसार को बढाया है। खोटे देव, शास्त्र गुरु इन तीन और इन तीनों को मानने वालों की प्रशंसा करना छह अनायतन है। इन्हें विमोचन करना योग्य है। ज्ञानी भव्यात्मा छह अनायतनों से बिल्कुल दूर रहता है तथा सम्यदृष्टि जीव जिनेन्द्र भगवान, दिगम्बर मुनि और सच्ची स्वाद्वादी रुप जिनवाणी मॉ के अतिरिक्त रागी-द्वेषी देव, पाखण्डी भेषधरी साधु रुप गुरु और खोटे शास्त्रों को स्वप्न में भी श्रध्दा और भक्ति से नमस्कार नहीं करता, यदि नमस्कार करता है तो सम्यग्दृष्टि नहीं है। इन तीन मुढताओं में विलीन अज्ञानी है।

प्रश्न १. कुगुरु अनायतन किसे कहते है ?
उत्तर - रागी-द्वेषी मिथ्यावेष्ी कुगुरुओं को गुरु मानना यह कुगुरु नाम का अनायतन है।

प्रश्न २. कुदेव अनायतन किसे कहते है ?

उत्तर - अट्ठारह दोष से सहित, रागी-द्वेषी कुदेवों को देव मानना कुदेव नाम का अनायतन है ।

प्रश्न ३. कुवृष अनायतन किसे कहते है ?

उत्तर - हिंसामय खोटे धर्म में धर्मपना मानना कुवृष (कुधर्म) अनायतन है ।

प्रश्न ४. कुगुरु सेवक अनायतन किसे कते है ?

उत्तर - कुगुरुओं की सेवा करने वालों की प्रशंसा करना कुगुरु सेवक अनायतन कहलाता है ।

प्रश्न ५. कुदेव सेवक अनायतन किसे कहते है ?

उत्तर - कुदेव सेवकों की सेवा करने वालों की प्रशंसा करना कुदेव सेवक अनायतन है ।

प्रश्न ६. कुधर्म सेवक अनायतन किसे कहते है ?

उत्तर - कुधर्म सेवकों की सेवा करने वा लों की प्रशंसा करना कुधर्म् सेवक अनायतन है ।

सम्यग्दृष्टि की महिमा

दोष रहित गुण सहित सुधी जे, सम्यकदर्श सजै है ।
चरित मोह वश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै है ॥
गेही पै गृह में न रचै ज्यों, ज ल तै भिन्न कम लहै ।
नगर नारी को प्यार यथा, कादे में हेम अमल है ॥ १५ ॥

अन्वयार्थ - (दोष रहित) दोषों से रहित (गुण सहित) गुणों से सहित (जे सुध्ी) जो बुध्दीमान है (वह सम्यक्दर्श सजै है) सम्यग्दर्शन से विभूषित है (चरित मोह वश लेश न संजम पै)चारित्र मोहनीय कर्म केउदय से लेश मात्र भी संयम न होने पर भी (सुरनाथ

जजै है) देवेन्द्र प्रशंसा करते है (गेही पै) गृहस्थ होने पर भी (गृह में न रचै) घर में लीन नहीं है (ज्यों जल तै भिन्न कमल है) जिस प्रकार वेश्या का प्रेम होता है (कादे में हेम अमल है) कीचड में पडा हुआ सोना भी निर्मल है ।

भावार्थ - सर्वत्र संसार में दो ही चीज मनुष्यों में विशेषरुप से दृष्टिगत होती आ रही है । उनमें से एक का कनाम है गुण, और दूसरे नाम है दौष । इन गुण और दोष में से दोनों या ऐक-एक व्यक्तियों में अनिवार्य रुप से रहते है । जिनमें दोषों का सद्भाव पाया जाता है उन्हें महर्षियों ने बहिरात्मा अज्ञानी मिथ्यादृष्टि चारों गतियों रुप भव सागर में गोता खाने वाले जीव कहा है । तथा जो भव्य आत्मायें सद्गुणों से अलंकृत है दोषों का सद्भाव जिनमें नहीं देखा जाता है । आगम की दृष्टि से जो मानवीय गुणों से अलंकृत है उन्हें आचार्यो ने अन्तरात्मा सम्यदृष्टि या मोक्षमार्गी एवं जिनेन्द्र भगवान केलघु नन्दन नाम से प्रतिपादीत किया है ।

समस्त दोष अर्थात आठ मद, आठ शांकदि दोष, छह अनायतन और तीन मूढता से रहित इस प्रकार २५ दोषों से रहित सम्यग्दृष्टि भव्य आत्मा होता है। कदाचित चारित्र मोहनिय कर्म केतीव्र उदय से चाहता हुआ भी लेश मात्र भी संयम अर्थात नियम अत पूर्वक चारित्र को ग्रहण नहीं कर पाये फिर भी निद रोष सम्यग्दर्शन केप्रभ्ांव से स्वर्गो केदेव और इन्द्रों द्वारा इनको प्रशंसा एवं वन्दना आदि की जाती है।

.१०६.

सम्यग्दृष्टि जीव की लीला कूछ विचित्र ही होती है। वह गृहस्थ अवस्था में रहकर भी घर गृहस्थी केचक्कर में अनुरक्त नहीं होता। जिस प्रकार जल में रहकर भभ्कमल जल से ऊपर रहता है, इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि जीव घर पर रहकर भी सबसे प्रथक रहता है। जिस प्रकार वेश्या की प्रीति मात्र पैसा कमाने केउद्देश्य से लागों केप्रति देखी जाती है, उसी प्रकार सम्यग्दष्टि की प्रीती मात्र लोकाचार का पिर्चाह करने केलिए होती है, जैसे कीचड में पडा हुआ स्वर्ण भी सदैव निर्मल रहता है, किटट कालिमा उसका स्पर्श नही कर पाती, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि भव्ययात्मा घर गृहस्थी स्त्री, पुत्र, मित्र परिजनों के बीच रहता हुआ भी अवपे कर्तव्य एवं स्वभाव में संलग्न रहकर राग-द्वेष छल कपट, निंन्दा आदि बुराई रुपी कातिमा से निर्लिप्त रहता है।

प्रश्न १. दोष किसे कहते है ?
उत्तर - बुरे कार्य या विचार को दोष कहते है।

प्रश्न २. दोष कितने होते है ?
उत्तर - दोष अनन्त होते है। परन्तु सम्यक्त्व गुण केघातक पच्चीस दोष है।

प्रश्न ३. गुण किसे कहते है ?
उत्तर - सद् पुरुषों के स्वभ्ांव या सरलता मय स्वच्छ निर्विकार रुप अच्छे विचारों को गुण कहते है।

प्रश्न ४. गुण कितने होते है ?
उत्तर - गुण अनन्त होते है परन्तु सम्यग्दर्शन विशेष की अपेक्षा आठ गुण होते है जिप्न्हें सम्यग्दर्शन केअंग भी कहते है।

.१०७.

प्रश्न ५. सम्यग्दृष्टि आत्मा किसे कहते है ?
उत्तर - संसार में निपुत्री जिस प्रकार पुत्र प्राप्ति की लालायत रहती है, निर्धन धन संग्रह के लिए लायत रहता है। ठीक उसी प्रकार जो आत्मा सम्यक चारित्र धारण्ं करने केलिए तीव्रता से लालायित रहता है उसे ही सम्यग्दृष्टि कहते है।

प्रश्न ६. चारित्र मोहनीय कर्म का उदय क्या सम्यग्दृष्टि जीव को संयम धारण करने से रोक सकता है ?

उत्तर - जिस समय चारित्र मोहनीय कर्म का तीव्र उदय चलता है उस समय सम्यग्दृष्टि जीव का सम्यक्चारित्र की प्राप्ति केलिए किया हुआ पुरुषर्थ् विफल होता है, अत: चारित्र मोहनीय का तीव्र उदय सम्यक्चारित्र धारण करने में बाधक है।

प्रश्न ७. सम्यग्दृष्टि जीव की क्या स्वर्ग केदेव पूजा करते है ?
उत्तर - स्वर्ग केदेव सम्यग्दृष्टि जीवों की आष्ट द्रव्य से पूजन नहीं करते है मात्र कभी -कभी उनको नमस्कार और उनकी सहायता करते है। इसे ही पूजन को तो कोई आपत्ति नहीं है।

प्रश्न ८. क्या घर में रहकर भी कोई घर गृहस्थी से विरक्त रह सकता है ?
उत्तर - भेद विज्ञान केबल से जिसने निज को निज और पर को पर यथार्थ रुप से जान लिया है ऐसे भव्यात्मा घर में रहते हुए भी गृहस्थ्ी केव्यामोह से विरक्त रह सकते है। जैसे- भरम्र चक्रवर्ती, सेठ सुदर्शन आदि।

सम्यग्दृष्टि कहॉ नहीं चाता

प्रथम नरक बिन षड भू ज्योतिष, वान भवन षंड नारी।
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यग्धारी ॥
तीन लोक तिहुँ काल मॉहि नहिं, दर्शन सों सुखकारी।
सकल धर्म को मूल यही, इस बिना करनी दुखकारी ॥ १६ ॥

अन्वयार्थ - (प्रथ्ंम नरक बिन षड भू) सम्यग्दृष्टि जीव पहले नरक केअतिरिक्त शेष छह नरकों में नहीं जाता (थावर विकलत्रय पशु में सम्यग्धारी नहिं उपजत) स्थावर , विकलत्रय तथा पशु योनि में भी सम्यग्दृष्टि जीव मर कर उत्पन्न नहीं होता (भवन वान ज्योतिष) भवनवासी व्यन्तर ज्योतिष्ी देवों में भी नहीं जाता (षंढ नारी) नपुंसक और नारी पर्याय में नहीं जाता (तीन लोक तिहूँ काल माहिं) तीनों लाकों और तीनों कालों में (दर्शन सों सुखकारी नहिं) सम्यग्दर्शन जैसा सुख देने वा कोई नहीं् है (सकल धर्म को मूल यही) यह सम्यग्दर्शन (मोक्ष मार्ग रुप) समस्त धर्मो का मूल है (इस बिन करनी दुखकरी) सम्यग्दर्शन केअभाव में सभ्ी क्रियाकाण्ड दुख जनक ही है।

भावार्थ - सम्यग्यदृष्टि जीव ने सम्यक्त्व सहित मरण करकेअगर पूर्व में नरक आयु का बंध कर लिया है। और उसकेअनन्तर सम्यग्दर्शन की उपलब्धि हुई है तो मात्र प्रथम नरक में उत्पन्न हो सकता है। जैसे-राजा श्रेणिक आदि। नरकों की छह भूमियों में सम्यग्दर्शन के साथ कोई भी जीव उत्पन्न नहीं होता। सभी प्रकार केभवनवासी व्यन्तर ज्योतिषी देवों में भी सम्यदृष्टि जीव उत्पन्न नहीं होता। नपुंसक और सभी जाति की स्त्री पर्याय तथ्ा स्थावर विकलत्रय पशुओं में भ्ी सम्यग्दृष्टि जीव जन्म नहीं जेता सम्यग्दृष्टि जीव जन्म नहीं लेता। सम्यग्दृष्टि का जन्म दरिद्री नीच कुल आदि पर्यायों में नही होता है। उसका जन्म सदैव उत्कृष्ट देव, राजा, महाराजा आदि सर्व सुखों से सम्पन्न उत्तम पर्याय में ही होता है।

मोक्ष मार्ग में सर्वोपरि स्थान सम्यग्दर्शन का है। सम्यक्दर्शन की महिमा अचिन्त्य है। अधो, ऊर्ध्वो और मध्य इस प्रकार तीनों लोकों में और भूत भविष्य वर्तमान इस प्रकार तीनों कालों में भव्य जीवों के लिए सम्यग्दर्शन जैसा सुखानुभव कराने वाला कोई विश्व में दूसरा प्रिय मित्र नहीं है। धर्म की आधार शिला यह सम्यग्दर्शन ही है। सम्यग्दर्शन के अभाव में ज्ञान और चारित्र का कोई महत्व नाहीं है। मात्र क्रियाकाण्ड आकुलता एवं राग द्वेष बढाने में ही निमित्त बन सकता है। आत्म शान्ति में नहीं। आत्मशान्ति तो सम्यग्दर्शन के साथ ज्ञान और चारित्र के परिपालन से ही सम्भव है।

प्रश्न १. क्या नरक सात होते है ?
उत्तर - नरक सात नहीं होते, नरकों की पृथ्वी सात होती है। नरकों की संख्या चौरासी लाख हे।

प्रश्न २. नरकों का संख्या चौरासी लाख किस प्रकार है ?
उत्तर - प्रथ्ंम पृथ्वी में ३० लाख, दुसरी में २५ लाख, तीसरी में १५ लाख, चौथ्ी में १० लाख, पांचवी में ३ लाख , छठवीं में ५ कम १ लाख , सातवीं में ५ नरक है। इस प्रकार सातों पृथ्वियों में मिलाकर सातों नरकों की संख्या चौरासी लाख, होती है। इन नरकों की विवेचना कहीं कहीं बिलों के नाम से मिलती है।

प्रश्न ३. सम्यग्दृष्टि जीव कहॉ-कहॉ नहीं जाता ?

उत्तर - अन्तिम ६ नरक भूमि पर, भवनत्रय, नपुसंक , स्त्री, स्थावर, विकलत्रय, हीनायु, दरिद्री आदि हीन पर्यायों में सम्यग्दृष्टि जीव मरकर उत्पन्न नहीं होता।

प्रश्न ४. सम्यग्दृष्टि जीव मरणोपरान्त कहॉ कहॉ जाता है ?
उत्तर- सम्यग्दृष्टि जीव स्वर्ग में देव होता है। अगर पूर्व में हो आयु का बन्ध कर लिया है तो प्रथम नरक एवं भोग भूमि में भी जा सकता है।

प्रश्न ५. हीन पर्यायों में सम्यग्दृष्टि का जन्म क्यों नहीं होता ?
उत्तर - सम्यग्दर्शन के प्रताप से सम्यग्दृष्टि जीव उस सातिशय पुण्य का संचय कर लेता है जो नियम से अद्गति उत्तम सद् पर्याय में ही जीव को ले जाता है , अर्थात ये सम्यग्दर्शन की ही महिमा है।

प्रश्न ६. क्या इन हीन पर्यायों में सभी सम्यग्दृष्टि जीव नहीं पाये जाते ?
उत्तर - इन सभी हीन पर्यायों मैं सम्यग्दर्शन सहित किसी भी जीव का जन्म नहीं होता। इन पर्याय में सबल निमित्त मिलने पर या पूर्व संस्कारों के बल से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ती की अपेक्षा से इन हीन पर्यायों में भी सम्यग्दृष्टि जीव संभव नहीं है।

प्रश्न ७. सम्यग्दर्शन को धर्म का मूल क्यों कहां ?

उत्तर - जैसे बिना जड के वृक्ष नहीं होता, बिना नीव के मकान नहीं बनता,उसी तरह बिना सम्यग्दर्शन के ज्ञान चारित्र और मोक्ष रुपी महल नहीं बनता। इसीलिए धर्म का मूल सम्यग्दर्शन को कहा है।

.१११.

सम्यग्दर्शन की महिमा एवं मनुष्य पर्याय की दुर्लभता

मोक्ष महल की परथम सीढी, या बिन ज्ञान चरित्रा।
सम्यक्ता न लहै सो दर्शन, धारों भव्य पवित्रा ॥
दौल समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवे।
यह नर भव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहीं होवे ॥

अन्वयार्थ् - (मोक्ष महल की परथम सीढी) सम्यग्दर्शन मोक्ष महल की पहली सीढी है (या बिन ज्ञान चरित्रा सम्यक्तवा लहै न) सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान सम्यक्त्वपने को (यथार्थता को) प्राप्त नहीं होता अर्थात सम्यग्ज्ञान और सम्यक चारित्र नाम नहीं पाते (सो पवित्रा दर्शन भव्य धारो) ऐसे पवित्र सम्यग्दर्शन को हे भव्यात्माओ। धारण करो (दौल) कविवर दौलतराम स्वयं को संबोधन करते है (सयाने सुन समझ चेत) हे चतूर आत्मन। जिनेन्द्र भगवान के वचनामृत को सून कर समझते हुए सचेत हो जाओ (काल वृथा मत खोवे) समय को व्यर्थ मत जाने दो (जो सम्यक नहि होवे) अगर सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई तो (यह नर भव फिर मिलन कठिन है) इस मनुष्य पर्याय का फिर से मिलना कठिन है।

भावार्थ - महल की मंजिल तक पहुचने के लिये आधर भूत निमित्त सीढियॉ होती है। बिनाउसीढियॉ के किसी भी महल की ऊचाइयों को नहीं छुआ जा सकता। उस मकान की सभी सीढियॉ का आधार प्रथ्म सीढी है। अगर प्रथ्म सीढी नहो तो निराधार द्वितीय, तृतीय आदि सीढी संभव ही नही, ठीक इसी प्रकार मोक्ष रुपी महल की सम्यग्दर्शन प्रथम सीढी है। सम्यग्दर्शन रुपी प्रथम सीढी के अभ्ांव समें सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रुपी सीढीयॉ संभव नहीं है, और सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रुपी सीढी के अभाव में मोक्ष महल की ऊचाई को प्राप्त करना सर्वथा असंभव ही है।

अत: इस परम पवित्र सम्यग्दर्शन को अष्ट अंगो को सहित पच्चीय दोषेासे रहित सभी भवात्माको धारण करणा चाहिए।

.११२.

कविवर दौलतराम जी स्वयंके साथ भ्ंव्यात्माओं को संबोधन करते हुऐ कहते है कि हे विवेकी महानुभावा। यह जिनेन्द्र भगवान से संसार समुद्र से तिरने का जो उपाये बताया है, उसे सुन समझ कर सचेत हो जाओ मोक्ष मार्ग पवर चलने के लिये। वृथा समय खोने में कोई सार नहीं है। अगर इस पर्याय में सम्यग्दर्शन रुपी रत्न की प्राप्ति नहीं कर पायी तो इस मनुष्य पर्याय का पुन: मिलना अत्यंन्त कठिन है।

प्रश्न १. सम्यग्दर्शन को मोक्ष महल की प्रथम सीढी क्यों कहा ?

उत्तर - सम्यग्दर्शन रुपी सीढी के बिना सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र रुप्ी सीढी संभव नहीं है। इसलिये सम्यग्दर्शन को मोक्ष महल की प्रथम सीढी कहा है।

प्रश्न २. सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान और चारित्र सम्यक् नाम क्यों नहीं पाते ?

उत्तर - सम्यग्दर्शन वस्तु के यथार्थ श्रध्दान को कहते है और सम्यक् श्रध्दा बिना ज्ञान और चारित्र में यथार्थता आना संभव नही ह`, इसलिए सम्यग्दर्शन के अभावमें ज्ञान और चारित्र सम्यग्ज्ञान औश्र सम्यक् चारित्र नाम नहीं पाते ।

प्रश्न ३. सम्यग्दर्शन के साथ में पवित्र विशेषण क्यों लगाया ?

उत्तर - आठ अंगो से सहित और पच्चीस दोषों से रहीत दिखाने के लिये पवित्र शब्द का प्रयोग किया है ।

प्रश्न ४. दौलतराम जी ने किसे संबोधित किया है ?

उत्तर - दौलतराम जी ने स्वयंअपने आपको, एवं चतुर भव्यात्माओं को संबोधित किया है की समय रहते ुए सम्यग्दर्शन रुपी रत्न को धारण करो ।

प्रश्न ५. सम्यग्दर्शन धारण नहीं करने से क्या हानि है ?

उत्तर - इस मनुष्य पर्याय में अगर सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकी तो पुन: इस मनुष्य पर्याय की प्राप्ति दुर्लभ है ।